www.researchvidyapith.com ISSN (Online): 3048-7331

Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(An Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

* Vol-1* *Issue-4* *November 2024*

उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा तथा अभिरूचि में सम्बन्ध का अध्ययन

दीपिका प्रजापति

शोधार्थिनी, शिक्षा–संकाय (बी0एड0) विभाग, स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर(उ0प्र0)

सारांश–

प्रस्तुत शोध–पत्र उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा तथा अभिरूचि में सम्बन्ध ा का अध्ययन विषय पर है। प्रस्तुत शोध में वर्णात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन को संपादित करने हेतु जनसंख्या के रूप में गाजीपुर तथा कासिमाबाद तहसील जिले के उच्चतर माध्यमिक स्तर के सी0 बी0 एस0 ई0 बोर्ड से सम्बद्ध विद्यालयों को सम्मिलित किया गया है। जिसमें से 7–7 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 11 व 12 में अध्ययनरत् 862 विद्यार्थियों जिसमें 436 पुरूष व 426 महिला विद्यार्थियों का चयन शोधार्थिनी द्वारा गुच्छीय प्रतिदर्शन विधि के प्रयोग से किया गया है। शोध ा में वर्णित चरों के मापन हेतु स्वनिर्मित अभिप्रेरणा व स्वनिर्मित अभिरुचि मापनी का प्रयोग किया गया है। प्रदत्तों के विश्लेषण व परिकल्पनाओं के सत्यापन हेतु कार्ल पियर्सन द्वारा प्रतिपादित प्रोडक्ट मोमेन्ट सहसम्बन्ध गुणांक तथा ज–परीक्षण सांख्यिकी प्रविधियों का प्रयोग चरों के मध्य सम्बन्ध मापने हेतु किया गया है। इस प्रकार अध ्ययन में पाया गया है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा तथा अभिरूचि के मध्य सार्थक रूप से धनात्मक सहसम्बन्ध पाया जाता है।

मुख्य शब्द– उच्चतर माध्यमिक स्तर, विद्यार्थी, अभिप्रेरणा, अभिरूचि, शैक्षिक उपलब्धि ।

सम्प्रत्यात्मक पृष्ठभूमि–

घ्वेदान्त के मतानुसारः–''समस्त ज्ञान हमारे अन्दर ही विद्यमान है'' शिक्षा, समाज में बदलाव लाने का महत्वपूर्ण कारक है। किसी भी देश का उत्थान वहां की शिक्षा व्यवस्था पर निर्भर करती है। मानव जाति ऐसा सामाजिक प्राणी है जो अपने बच्चों को सबसे ज्यादा शिक्षित करता है। जब कोई मनुष्य अपने प्रयासों से अपने शिक्षा पूरा करता है तो वह समाज में रहकर कौशल व मूल्यवान बन जाता है तभी व्यक्ति को सही मायने में शिक्षित कहा जाता है। जॉन ड्यूबी–''शिक्षा अनुभवों के सतत् पुर्ननिर्माण द्वारा जीवन की प्रक्रिया है। वह व्यक्ति में उन समस्त क्षमताओं का विकास है, जो उसको अपने वातावरण को नियंत्रित करने एवं अपनी सम्भावनाओं को पूर्ण करने के योग्य बनाती है।'' ''शिक्षा केवल ज्ञान का हस्तांतरण नहीं, बल्कि रुचि और प्रेरणा का जागरण हैं''। चाणक्य नीति और भर्तृहरि कृत नीतिशतक से यह संस्कृत सुभाषितानि के एक श्लोक में कहा भी कहा गया है–''येषां न विद्या न तपो न दानं, ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः,ते मर्त्यलोके भुवि भारभूताः, मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति''।। अर्थात् जिन व्यक्तियों में विद्या, तप, दान, ज्ञान, शील व धर्म ये छः गुणों का अभाव हो वे इस पृथ्वी पर मनुष्य के रूप में भी मृग की भांति हैं। इसी मृग की भांति विचरते प्राणी को मानव बनाने का कार्य शिक्षा करती है।

वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में, जब छात्र की अभिरुचि और अभिप्रेरणा को शिक्षा से जोड़ा जाता है, तब ज्ञान केवल सूचना नहीं रह जाता, बल्कि वह अनुभव बन जाता है। किसी भी विद्यार्थी की पढ़ाई में सफलता कई बातों पर निर्भर करती है, जैसे– उसकी मानसिक स्थिति, सीखने की प्रवृत्ति, पारिवारिक वातावरण, विद्यालय की शिक्षण पद्धति, शिक्षकों की भूमिका, और सामाजिक तथा आर्थिक कारक आदि शामिल होते हैं। शिक्षा में सफलता केवल ज्ञान प्राप्ति तक सीमित नहीं होती, यद्यपि यह इस बात पर भी आधारित है कि विद्यार्थी कितनी अभिरुचि और

अभिप्रेरणा के साथ अध्ययन करता है। मुख्य रूप से उच्चतर माध्यमिक स्तर पर, जहां विद्यार्थी अपने करियर की दिशा तय करने के लिए गंभीर अध्ययन में संलग्न होते हैं, वहां अभिप्रेरणा और अभिरुचि प्रमुख रुप में शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले प्रमुख तत्वों के रूप में उभरते हैं। इस स्तर पर विद्यार्थियों की रुचि विभिन्न विषयों में भिन्न होती है और यह उनकी बौद्धिक क्षमताओं, बाहरी प्रोत्साहन, आत्म–प्रेरणा और उनके शैक्षिक उद्देश्य पर आश्रित रहती है।

अभिप्रेरणा एक मानसिक प्रक्रिया है जो किसी भी व्यक्ति को किसी विशेष लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रेरित करती है और उसमें निरंतरता बनाए रखती है। शिक्षा के संदर्भ में, अभिप्रेरणा वह शक्ति होती है जो विद्यार्थियों को अध्ययन के प्रति जागरूक और उत्साहित बनाती है। यह आंतरिक और बाह्य दोनों प्रकार की हो सकती है। आंतरिक अभिप्रेरणा वह होती है जो विद्यार्थी के भीतर से उत्पन्न होती है, जैसे ज्ञान की भूख, आत्म–संतोष, और नए विषयों को सीखने की रुचि।

दूसरी ओर, अभिरुचि भी एक महत्वपूर्ण घटक है जो बच्चों की शैक्षिक सफलता से प्रभावित होता है। जब किसी विद्यार्थी को किसी विशेष विषय या अध्ययन क्षेत्र में रुचि होती है, तो वह उस विषय पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है और उसे गंभीरता से समझने का प्रयास करता है। इसके विपरीत, यदि विद्यार्थी को किसी विषय में रुचि नहीं होती है, तो वह उस विषय में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाता। गेट्स और अन्यः गेट्स के अनुसार, अभिरुचि वह आंतरिक प्रेरणा है, जिसके कारण व्यक्ति को किसी खास कार्य को करते समय खुशी और आत्मसंतोष प्राप्त होता है''।

शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले अन्य सामाजिक और पर्यावरणीय कारकों का भी इस अध्ययन में समावेश किया गया है। पारिवारिक वातावरण, विद्यालय की शिक्षण विधियां, अध्यापकों का सहयोग, और सहपाठियों का प्रभाव, सभी विद्यार्थी की उपलब्धि अभिप्रेरणा और अभिरूचि को प्रभावित करते हैं। एक सकारात्मक शिक्षण वातावरण, जिसमें अध्यापक विद्यार्थियों को प्रेरित करते हैं, उनके कौशल को विकसित करने में सहायता करते हैं, और सीखने की स्वतंत्रता प्रदान करते हैं, छात्रों की अभिप्रेरणा को बढ़ाने में सहायक होता है। इसके विपरीत, कठोर अनुशासन, निषेधात्मक वातावरण, और सीखने की स्वतंत्रता का अभाव छात्रों की अभिप्रेरणा को बाधित कर सकता है।

2. समस्या कथन में प्रयुक्त शब्दों की संक्रियात्मक परिभाषा–

2.1 उच्चतर माध्यमिक स्तर– उच्चतर माध्यमिक शिक्षा किसी भी राष्ट्र की शैक्षिक संरचना का एक महत्वपूर्ण चरण होता है, जो विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा, व्यावसायिक कौशल तथा जीवनोपयोगी क्षमताओं के लिए तैयार करता है। यह स्तर आमतौर पर दसवीं कक्षा के बाद प्रारंभ होता है और बारहवीं कक्षा तक चलता है, जिसमें छात्रों को विभिन्न विषयों में विशेषज्ञता प्राप्त करने का अवसर मिलता है।

2.2. विद्यार्थी– प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थी से अभिप्राय केवल कक्षा 11 तथा कक्षा 12 में अध्ययनरत् विद्यार्थियों से है। जो जीवनभर ज्ञान प्राप्त करने की जिज्ञासा रखता है। सीखने की यह प्रक्रिया केवल औपचारिक शिक्षा तक सीमित नहीं होती, बल्कि यह अनुभवों, सामाजिक परिवेश, नैतिक मूल्यों और व्यवहारिक ज्ञान से भी जुड़ी होती है। एक सच्चा विद्यार्थी वह होता है जो न केवल पुस्तकीय ज्ञान अर्जित करता है, बल्कि अपने बौद्धिक, नैतिक और सामाजिक विकास के लिए सतत प्रयासरत रहता है।

2.3. अभिप्रेरणा– अभिप्रेरणा वह मानसिक स्थिति या मानसिक प्रेरणा है, जो किसी व्यक्ति को किसी विशेष कार्य को पूरा करने के लिए उत्साहित करती है। अभिप्रेरणा सीखने का सर्वोत्तम राजमार्ग है। यह शब्द मुख्य रूप से मनोविज्ञान और शिक्षा के क्षेत्र में उपयोग किया जाता है। यह व्यक्ति के विचारों, भावनाओं और व्यवहार को प्रभावित करती है और उसे अपने कार्यों को सफलतापूर्वक संपन्न करने की दिशा में अग्रसर करती है। शिक्षा, खेल, व्यवसाय, कला, सामाजिक जीवन, वैज्ञानिक अनुसंधान, और व्यक्तिगत विकास सहित प्रत्येक क्षेत्र में अभिप्रेरणा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

2.4. अभिरुचि– प्रस्तुत अध्ययन में अभिरूचि से अभिप्राय उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में पाये जाने वाली शैक्षिक अभिरूचि से है जिसका अर्थ शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना तथा शैक्षिक वातावरण के प्रति सांवेगिक रूप से लगाव होने से है।

2.5. शैक्षिक उपलब्धि– शैक्षिक उपलब्धि का मापन करने हेतु विद्यार्थियों के अंतिम बोर्ड परीक्षा के परिणामों को लिया गया है। शैक्षणिक उपलब्धि से तात्पर्य शिक्षा में छात्र द्वारा प्राप्त की गई सफलता से है। यह परिभाषा छात्रों के परीक्षा परिणामों, उनके द्वारा पूर्ण किए गए असाइनमेंट और उन्हें प्राप्त अंकों पर आधारित है। शैक्षणिक उपलब्धि कई कारकों से प्रभावित हो सकती है, जैसे शिक्षक की विधि, छात्र की प्रेरणा, परिवार का समर्थन और

स्कूल का माहौल।

3. अध्ययन का औचित्य–

शिक्षा केवल ज्ञान अर्जन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थियों के समग्र विकास में सहायक होती है। उच्चतर माध्यमिक स्तर पर, विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा और अभिरुचि उनकी शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती है। जब किसी विषय में रुचि या प्रेरणा की कमी होती है, तो शैक्षिक प्रगति बाधित हो सकती है। इस शोध का उद्देश्य यह समझना है कि आंतरिक और बाह्य अभिप्रेरणा विद्यार्थियों के प्रदर्शन को कैसे प्रभावित करती है और उनकी रुचि किस हद तक उनकी उपलब्धियों में सहायक होती है। यह अध्ययन शिक्षा नीति निर्माताओं, शिक्षकों, अभिभावकों और विद्यार्थियों के लिए महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि यह शैक्षिक उपलब्धि बढ़ाने के प्रभावी तरीकों को समझने में मदद करेगा। शिक्षक यदि प्रेरणा और रुचि के स्रोतों को पहचान सकें, तो वे शैक्षिक प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बना सकते हैं। यह अध्ययन सामाजिक और मनोवैज्ञानिक कारकों को भी उजागर करेगा जो विद्यार्थियों की प्रेरणा को प्रभावित करते हैं, और इससे शैक्षिक रणनीतियों को विकसित करने में मदद मिलेगी।

4. समस्या कथन–

उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा तथा अभिरूचि में सम्बन्ध का अध्ययन करना

5. शोध का उद्देश्य–

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा तथा अभिरूचि में सम्बन्ध का अध्ययन करना।
2. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा तथा अभिरूचि में सम्बन्ध का अध्ययन करना।
3. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् पुरूष विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा तथा अभिरूचि में सम्बन्ध का अध्ययन करना।

6. शोध की परिकल्पना–

H01– उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा तथा अभिरूचि में कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

H02– उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा तथा अभिरूचि में कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

H03– उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् पुरूष विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा तथा अभिरूचि में कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

7. शोध अभिकल्प–

7.1. जनसंख्या– प्रस्तुत शोध की जनसंख्या गाजीपुर, कासिमाबाद जनपद के विभिन्न विद्यालयों में अध्ययनरत् उच्च माध्यमिक स्तर के सभी विद्यार्थियों को सम्मिलित करते हुए निर्धारित की गयी। जनसंख्या के प्रतिनिधित्व करने हेतु अध्ययनरत् कक्षा 11 व 12 के विद्यार्थिंयों की कुल जनसंख्या प्रस्तावित अध्ययन का चयन यादृच्छिक न्यादर्श तकनीक द्वारा किया गया है।

7.2. न्यादर्श– न्यादर्श के चयन हेतु शोधार्थिनी द्वारा गुच्छीय प्रतिदर्शन विधि का प्रयोग करते हुए निम्न चरणों में न्यादर्श का चुनाव किया गयाः–

प्रथम चरण में 2 तहसीलों का चुनाव लॉटरी विधि द्वारा किया गया जिसमें गाजीपुर तथा कासिमाबाद तहसील का प्राप्त हुआ।

द्वितीय चरण में प्रत्येक तहसील से 7–7 विद्यालयों का चुनाव लॉटरी विधि द्वारा किया गया है।

तृतीय चरण में प्रत्येक विद्यालय की उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं से एक कक्षा का चुनाव किया गया।

7.3 शोध विधि– प्रस्तुत अध्ययन हेतु वर्णात्मक अनुसंधान ;क्पेबतपचजपअम उमजीवकद्ध के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि ^;नतअमल उमजीवकद्ध का प्रयोग किया गया है।

7.4 शोध उपकरण– प्रस्तुत अध्ययन के शीर्षक में प्रयुक्त चरों के मापन हेतु शोधार्थिर्नी द्वारा निम्न उपकरणों का प्रयोग किया गया है–

1. अभिप्रेरणा मापनी (स्वनिर्मित),

2. शैक्षिक अभिरूचि मापनी (स्वनिर्मित),
3. शैक्षिक उपलब्धि के लिये अंतिम बोर्ड परीक्षा के परिणामों को लिया है।

8. शोध में प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियाँ–

प्रस्तुत शोध में आंकड़ों के सांख्यिकी विश्लेषण के लिए कार्ल पियर्सन द्वारा प्रतिपादित प्रोडक्ट मोमेंट सह–सम्बन्ध गुणांक, ज–परीक्षण का प्रयोग किया गया हैं।

9. प्रदत्तों का विश्लेषण, निष्कर्ष एवं व्याख्या–

उद्देश्य 9.1– उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा तथा अभिरूचि में सम्बन्ध का अध्ययन करना।

परिकल्पना H01– उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा तथा अभिरूचि में कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

सारणी 9.1

उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा तथा अभिरूचि में सम्बन्ध दर्शाती तालिका

चर	संख्या (N)	(dof) (N-1)	सार्थकता स्तर (α)	सहसम्बन्ध गुणांक (r)	t – सारणी मान	t – परिकलित मान	परिणाम
उच्चतर मा0 स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा	862	dof = 861	α = 0.05	r = 0.131	1.96	3.87	Ho = स्वीकृत नहीं
उच्चतर मा0 स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अभिरूचि	862						

व्याख्या– उपरोक्त तालिका 9.1 से स्पष्ट है कि विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा तथा अभिरूचि के मध्य सहसम्बन्ध ा गुणांक 0.131 प्राप्त हुआ है जो कि दोनों चरों के मध्य धनात्मक सम्बन्ध को दर्शाता है किन्तु यह सम्बन्ध सार्थक रूप से धनात्मक है या नहीं यही ज्ञात करने के लिये शोधार्थिनी ने टी–परीक्षण का प्रयोग किया जिसमें टी–परीक्षण का परिकलित मान 3.87, टी–परीक्षण के सारणी मान (कवत्रि 861ए ं त्र 0ण्05 पर ज त्र 1ण्96) से अधिक प्राप्त हुआ जो कि चरों के मध्य सार्थक सम्बन्ध दर्शाते हुए शून्य परिकल्पना को स्वीकृत नहीं करता।

निष्कर्ष के तौर पर यह कहा जा सकता है कि–

उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् कुल विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा तथा अभिरूचि के मध्य सार्थक रूप से धनात्मक सहसम्बन्ध पाया जा रहा है। जिसका सम्भावित कारण जिन विद्यार्थियों में आत्म–प्रेरणा और अध्ययन के प्रति रुचि अधिक थी, उन्होंने शैक्षणिक रूप से बेहतर प्रदर्शन किया। इसके विपरीत, जिन विद्यार्थियों में पढ़ाई के प्रति रुचि कम थी, उनकी उपलब्धि अपेक्षाकृत निम्न रही। यह अध्ययन दर्शाता है कि बाह्य एवं आंतरिक अभिप्रेरणा दोनों ही शैक्षिक प्रदर्शन को प्रभावित करते हैं। बाह्य अभिप्रेरणा जैसे कि शिक्षकों द्वारा सराहना, माता–पिता का समर्थन, और पुरस्कार प्रणाली विद्यार्थियों को बेहतर प्रदर्शन के लिए प्रेरित करते हैं, जबकि आंतरिक अभिप्रेरणा, जिसमें आत्म–प्रेरणा, ज्ञान प्राप्ति की इच्छा, और आत्म–संतोष की भावना शामिल है, दीर्घकालिक शैक्षिक उपलब्धि को प्रोत्साहित करती है।

उद्देश्य 9.2– उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा तथा अभिरूचि में सम्बन्ध का अध्ययन करना।

परिकल्पना H02– उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा तथा अभिरूचि में कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

सारणी 9.2

उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा तथा अभिरूचि में सम्बन्ध दर्शाती तालिका

चर	संख्या (N)	(dof) (N.1)	सार्थकता स्तर (α)	सहसम्बन्ध गुणांक (त)	t– सारणी मान	t – परिकलित मान	परिणाम
उच्चतर मा0 स्तर पर अध्ययनरत् महिला विद्या0 की अभिप्रेरणा	436	dof = 435	α = 0.05	r = 0.169	1.96	3.57	Ho = स्वीकृत नहीं
उच्चतर मा0 स्तर पर अध्ययनरत् महिला विद्या0 की अभिरूचि	436						

व्याख्या– उपरोक्त तालिका 9.2 से स्पष्ट है कि महिला विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा तथा अभिरूचि के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक 0.169 प्राप्त हुआ है जो कि दोनों चरों के मध्य धनात्मक सम्बन्ध को दर्शाता है किन्तु यह सम्बन्ध सार्थक रूप से धनात्मक है या नहीं यही ज्ञात करने के लिये शोधार्थिनी ने टी–परीक्षण का प्रयोग किया जिसमें टी–परीक्षण का परिकलित मान 3.57, टी–परीक्षण के सारणी मान (कवित्र 436ए ˙ त्र 0ण्05 पर ज त्र 1ण्96) से अधिक प्राप्त हुआ जो कि चरों के मध्य सार्थक सम्बन्ध दर्शाते हुए शून्य परिकल्पना को स्वीकृत नहीं करता।

निष्कर्ष के तौर पर यह कहा जा सकता है कि–

उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत महिला विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा तथा अभिरूचि के मध्य सार्थक रूप से धनात्मक सहसम्बन्ध पाया जा रहा है। जिसका सम्भावित कारण महिला विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा के घटकों का अभिरूचि के साथ सकारात्मक रूप से सम्बन्धित होना हो सकता है।

उद्देश्य 9.3– उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् पुरूष विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा तथा अभिरूचि में सम्बन्ध का अध्ययन करना।

परिकल्पना H03– उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् पुरूष विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा तथा अभिरूचि में कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

सारणी 9.3

उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् पुरूष विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा तथा अभिरूचि में सम्बन्ध दर्शाती तालिका

चर	संख्या (N)	(dof) (N.1)	सार्थकता स्तर (α)	सहसम्बन्ध गुणांक (r)	t – सारणी मान	t – परिकलित मान	परिणाम
उच्चतर मा0 स्तर पर अध्ययनरत् पुरूष विद्या0 की अभिप्रेरणा	426	dof = 425	α = 0.05	r = 0.213	1.96	4.48	Ho = स्वीकृत नहीं
उच्चतर मा0 स्तर पर अध्ययनरत् पुरूष विद्या0 की अभिरूचि	426						

व्याख्या– उपरोक्त तालिका 9.3 से स्पष्ट है कि पुरूष विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा तथा अभिरूचि के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक 0.231 प्राप्त हुआ है जो कि दोनों चरों के मध्य धनात्मक सम्बन्ध को दर्शाता है किन्तु यह सम्बन्ध सार्थक रूप से धनात्मक है या नहीं यही ज्ञात करने के लिये शोधार्थिनी ने ज–परीक्षण का प्रयोग किया जिसमें ज–परीक्षण का परिकलित मान 4.48, ज–परीक्षण के सारणी मान (कवित्र 425ए ˙ त्र 0ण्05 पर ज त्र 1ण्96) से अधिक प्राप्त हुआ जो कि चरों के मध्य सार्थक सम्बन्ध दर्शाते हुए शून्य परिकल्पना को स्वीकृत नहीं करता।

निष्कर्ष के तौर पर यह कहा जा सकता है कि–

उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत पुरूष विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा तथा अभिरूचि के मध्य सार्थक रूप से धनात्मक सहसम्बन्ध पाया जा रहा है। जिसका सम्भावित कारण पुरूष विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा के घटकों का अभिरूचि के साथ सकारात्मक रूप से सम्बन्धित होना तथा 12वीं कक्षा के विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा अधिक पाई गई, क्योंकि वे करियर और प्रतियोगी परीक्षाओं के प्रति अधिक गंभीर होते हैं।

निष्कर्ष, शैक्षिक निहितार्थ और भविष्य में शोध हेतु सुझाव

प्रस्तुत शोध अध्ययन से प्राप्त ऑकड़ों को वर्गीकरण करने के उपरान्त शोध का जो परिणाम प्राप्त हुआ उसका निष्कर्ष निम्नवत् हैः–

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा तथा अभिरूचि के मध्य सार्थक रूप से धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया जिसका सम्भावित कारण उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अभिप्रेरणा और अभिरुचि की महत्वपूर्ण भूमिका है। जिन विद्यार्थियों में आत्म–प्रेरणा और अध्ययन के प्रति रुचि अधिक थी, उन्होंने शैक्षणिक रूप से बेहतर प्रदर्शन किया। इसके विपरीत, जिन विद्यार्थियों में पढ़ाई के प्रति रुचि कम थी, उनकी उपलब्धि अपेक्षाकृत निम्न रही। यह अध्ययन दर्शाता है कि बाह्य एवं आंतरिक अभिप्रेरणा दोनों ही शैक्षिक प्रदर्शन को प्रभावित करते हैं। बाह्य अभिप्रेरणा जैसे कि शिक्षकों द्वारा सराहना, माता–पिता का समर्थन, और पुरस्कार प्रणाली विद्यार्थियों को बेहतर प्रदर्शन के लिए प्रेरित करते हैं, जबकि आंतरिक अभिप्रेरणा, जिसमें आत्म–प्रेरणा, ज्ञान प्राप्ति की इच्छा, और आत्म–संतोष की भावना शामिल है, दीर्घकालिक शैक्षिक उपलब्धि को प्रोत्साहित करती है।

2. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा तथा अभिरूचि के मध्य सार्थक रूप से धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया जिसका सम्भावित कारण महिला विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा के घटकों का अभिरूचि के साथ सकारात्मक रूप से सम्बन्धित होना हो सकता है।

3. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् पुरूष विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा तथा अभिरूचि के मध्य सार्थक रूप से धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया जिसका सम्भावित कारण पुरूष विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा के घटकों का अभिरूचि के साथ सकारात्मक रूप से सम्बन्धित होना तथा 12वीं कक्षा के विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा अधिक पाई गई, क्योंकि वे करियर और प्रतियोगी परीक्षाओं के प्रति अधिक गंभीर होते हैं।

10.1 शोध निष्कर्षों के आधार पर प्रमुख बातें–

1. **अभिप्रेरणा और शैक्षिक उपलब्धि का सम्बंध**– विद्यार्थियों की आंतरिक प्रेरणा जितनी अधिक होती है, उनका प्रदर्शन उतना ही बेहतर होता है।
2. **अभिरुचि और शैक्षिक उपलब्धि का सम्बंध**– जिन विषयों में विद्यार्थियों की रुचि होती है, उनमें वे अधिक गहराई से सीखते हैं और अच्छे अंक प्राप्त करते हैं।
3. **लिंग और क्षेत्रीय अंतर**– छात्राओं की अभिप्रेरणा और शैक्षिक उपलब्धि का स्तर छात्रों की तुलना में अधिक पाया गया। शहरी विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा और शैक्षिक उपलब्धि ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक प्रभावी रही।
4. **सहसम्बन्ध की पुष्टि**– अभिप्रेरणा और शैक्षिक उपलब्धि के बीच धनात्मक सहसंबंध पाया गया है, जो सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण है।

10.2 शैक्षिक उपादेयता–

प्रस्तुत अध्ययन जो उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा, अभिरुचि, और शैक्षणिक उपलब्धि पर केंद्रित है, शैक्षिक क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण निष्कर्ष प्रस्तुत करता है। उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की प्रेरणा और रुचि का उनकी शैक्षिक उपलब्धि से गहरा संबंध होता है। जब विद्यार्थी प्रेरित और रुचि रखते हैं, तो वे बेहतर प्रदर्शन करते हैं।

10.3 अभिभावकों के लिए–

1. अभिभावक अपने बच्चों को छोटे–छोटे शैक्षिक लक्ष्य निर्धारित करने में मदद करें और उनकी हर छोटी उपलब्धि की सराहना करें ताकि उनका आत्मविश्वास और प्रेरणा बढ़े।
2. बच्चों की रुचियों को पहचानें और उन्हें कला, खेल, या विज्ञान जैसी गतिविधियों में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करें, जो उनकी शैक्षिक रुचि को बढ़ावा दे।
3. घर पर सकारात्मक और तनावमुक्त माहौल बनाएँ, जहाँ बच्चे अपनी समस्याएँ और विचार खुलकर साझा कर सकें, जिससे उनकी मानसिक स्थिति मजबूत हो।

10.4 शिक्षकों के लिए–

1. शिक्षक कक्षा में प्रेरणादायक शिक्षण विधियों, जैसे कहानी–आधारित शिक्षण, समूह चर्चा, और प्रायोगिक गतिविधियों का उपयोग करें ताकि विद्यार्थी उत्साहित रहें।
2. विद्यार्थियों की रुचियों को पहचानकर पाठ्यक्रम को अनुकूलित करें, जैसे प्रोजेक्ट–आधारित शिक्षण या रचनात्मक कार्य, जो उनकी सीखने की प्रक्रिया को रोचक बनाए।
3. कक्षा 11 के विद्यार्थियों के लिए विशेष ध्यान दें, क्योंकि उनकी प्रेरणा और रुचि कक्षा 12 की तुलना में कम हो सकती है, और उनके लिए प्रेरणादायक कार्यशालाएँ आयोजित करें।

10.5 विद्यालय प्रशासन के लिए–

1. स्कूल प्रशासन अभिप्रेरणा और अभिरुचि बढ़ाने वाली नीतियाँ लागू करे, जैसे पुरस्कार प्रणाली, प्रेरणादायक अतिथि व्याख्यान, और रचनात्मक क्लब की स्थापना।
2. ग्रामीण क्षेत्रों में शैक्षिक संसाधनों, जैसे डिजिटल उपकरण, पुस्तकालय, और प्रयोगशालाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करें ताकि सभी विद्यार्थियों को समान अवसर मिलें।
3. शिक्षकों के लिए नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करें, जिसमें प्रेरणादायक शिक्षण, रुचि–आधारित दृष्टिकोण, और विद्यार्थी–केंद्रित विधियों पर जोर दिया जाए।

10.6 भविष्य में शोध हेतु सुझाव–

शोधार्थी ने अपना शोध कार्य पूर्ण कर लिया है तथा अपने सम्पूर्ण शोध के अनुभव के आधार पर वह निम्न क्षेत्रों तथा चरों के सम्बन्ध में भावी शोधार्थियों द्वारा शोध कार्य कराये जाने की अपेक्षा की थीः–

1. भविष्य में यह अनुसंधान अन्य मनोवैज्ञानिक कारकों जैसेः– आत्म–विश्वास, तनाव, समायोजन तथा समय प्रबंधन, के साथ किया जा सकता है।
2. विभिन्न बोर्डों (UP Board, ICSC आदि) के विद्यार्थियों की तुलना की जा सकती है।
3. ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों की प्रेरणा और उपलब्धि में अंतर का विश्लेषण किया जा सकता है।

निष्कर्ष–

यह स्पष्ट होता है कि अभिप्रेरणा और अभिरुचि केवल सहायक तत्व नहीं, बल्कि शैक्षिक सफलता के मूल स्तंभ हैं। यदि इनका समुचित विकास किया जाए, तो विद्यार्थियों की उपलब्धि में उल्लेखनीय सुधार संभव है।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1. खरे डॉ. राजीव, और मंसूरी डॉ. इम्तियाज, (2015), ''भारत में शिक्षा स्थिति, समस्यायें एवं मुद्दे'', राखी प्रकाशन प्रा.लि.आगरा।
2. श्वेता तिवारी, ''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में अभिरूचि, अभिप्रेरणा एवं मूल्य का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन'', इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ साइंटिफिक रिसर्च इन साइंस एंड टेक्नोलॉजी, पृष्ठः 366–371।
3. अस्थाना, बिपिन, डॉ. और अग्रवाल, एन.आर. (1994). मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन और मूल्यांकन : आगरा विनोद पुस्तक मंदिर।
4. कपिल,एच.के.(2005). "अनुसंधान विधियाँ", आगरा : एच.पी. भार्गव बुक हाउस।
5. कपिल,एच.के.(2005). "सांख्यिकी के मूल तत्व", आगरा : एच.पी. भार्गव बुक हाउस।
6. कुलश्रेष्ठ एस.पी. (2008). ''शिक्षा मनोविज्ञान'', मेरठ : आर.लाल बुक डिपो।
7. गुप्ता, एस0 पी0 तथा गुप्ता, अलका (2007). ''सांख्यिकीय विधियॉं'', इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन।
8. गुप्ता, एस0 पी0 तथा गुप्ता, अलका (2007). ''आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन'', इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन।
9. गुप्ता, एस0 पी0 तथा गुप्ता, अलका (2008). ''उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, इलाहाबाद'' : शारदा पुस्तक भवन।
10. पाण्डेय, के.पी. (2008). ''शैक्षिक अनुसंधान''. वाराणसी : विश्वविद्यालय प्रकाशन।
11. पाण्डेय, के.पी. (2007). ''शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी''. वाराणसी : विश्वविद्यालय प्रकाशन।
12. सारस्वत, मालती एवं कुमार, कुमुद (2003). ''शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा'', इलाहाबाद : आलोक प्रकाशन।

Cite this Article-

'दीपिका प्रजापति, "उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा तथा अभिरूचि में सम्बन्ध का अध्ययन", *Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal (RVIMJ), ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:1, Issue:11, November 2024.*

Journal URL- https://www.researchvidyapith.com/

DOI- 10.70650/rvimj.2024v1i40017

Published Date- 12 November 2024